आदिवासी स्त्रियों के विकास के लिए विमर्श जरूरी : अर्जुन

आर्यभट्ट सभागार में आयोजित आदिवासी स्त्री विमर्श कार्यक्रम का दीप जलाकर उद्घाटन करते केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा व अन्य। ● हिन्दुस्तान

अमृत महोत्सव

रांची, प्रमुख संवाददाता। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, रांची विश्वविद्यालय और विकास भारती विशुनपुर की ओर से आजादी का अमृत महोत्सव के तहत मंगलवार को आर्यभट्ट सभागार में एक संगोष्ठी आयोजित की गई। आदिवासी स्त्री विमर्श पर आयोजित संगोष्ठी में बतौर मुख्य अतिथि केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा ने कहा कि जनजातीय लोगों के उत्थान के लिए आदिवासी स्त्री विमर्श जैसे आयोजन प्रशंसनीय हैं। आदिवासी स्त्रियों के विकास के लिए ऐसे आयोजनों में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने की जरूरत है।

अर्जुन मुंडा ने कहा कि आदिवासी स्त्रियों की कमजोरियों, समस्याएं, जागरुकता व सशक्तिकरण के लिए किया गया चिंतन ही आदिवासी स्त्री विमर्श है। मौके पर विशिष्ट अतिथि राज्यसभा सांसद समीर उरांव ने कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम का आयोजन सुदूरवर्ती जनजातीय क्षेत्रों में भी करने की जरूरत है।

आदिवासी महिलाओं की समस्याओं पर चर्चा

संगोष्ठी में विभिन्न सत्रों में वक्ताओं ने समाज में आदिवासी महिलाओं की स्थिति, विश्वदर्शन में आदि-दर्शन की भागीदारी, आदिवासी कला, आदिवासी महिलाओं की आधुनिक चुनौतियां, वन-रोजगार, स्वास्थ्य और वन-संरक्षण आदि विषयों पर चर्चा की गई। वक्ता के रूप में डॉ दमयंती सिंकू, डॉ स्टेफी टेरेसा मुर्मू, डॉ मीनाक्षी मुंडा, मधुश्री हतियाल, सोनाली मुर्मू सोरेन, प्रो अनिल कुल्लू, महादेव टोप्पो, सुक्मनी हेम्ब्रम व रानी कुमारी शामिल थे।

आर्यभट्ट सभागार में आदिवासी स्त्री विमर्श विषय पर संगोष्ठी, बोले अर्जुन मुंडा

बेटी के जन्म को ताकत मानता है आदिवासी समाज

वरीय संवाददाता, रांची

आदिवासी समाज में बेटियों के जन्म पर दुख नहीं मनाया जाता है, बल्कि बेटी के जन्म को यह समाज अपनी ताकत की बात मानता है. यहां महिलाओं की स्थिति बाकी समाज की तरह नहीं है. उक्त बातें केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा ने मंगलवार को आदिवासी स्त्री विमर्श विषय पर आयोजित संगोष्ठी में कही. आजादी के अमृत महोत्सव के तहत आर्यभट्ट सभागार में कार्यक्रम का आयोजन इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, रांची विवि एवं विकास भारती बिशुनपुर के तत्वावधान में किया गया था. उन्होंने कहा कि आदिवासी स्त्रियों के विकास के लिये ऐसे आयोजनों में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने की जरूरत है. इनकी समस्याओं, जागरूकता एवं सशक्तीकरण के लिए किया गया चिंतन ही आदिवासी स्त्री विमर्श है. ज्यसभा सांसद समीर उरांव ने कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम का आयोजन सुदूरवर्ती जनजातीय क्षेत्रों में भी करने की जरूरत है. कार्यक्रम के विभिन्न सत्रों में डॉ दमयंती सिंकू, डॉ स्टेफी टेरेसा मुर्मू, डॉ मीनाक्षी मुंडा, मधुश्री हठियाल, सोनाली मुर्मू, प्रो अनिल कुल्लू, महादेव टोप्पो, रानी कुमारी ने अपनी बातें रखीं.

कार्यक्रम में विचार रखते केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा.

गर्व से कहती हूं कि मैं आदिवासी हूं : मेयर

रांची की मेयर डॉ आशा लकड़ा ने कहा कि आदिवासी होना गर्व की बात है. उन्होंने कहा कि गर्व से कहती हूं कि मैं आदिवासी हूं. हालांकि, सभी समाज की अपनी परंपरा अलग-अलग है, लेकिन हम सब एक हैं. कार्यक्रम में विकास भारती के सचिव पद्मश्री अशोक भगत, रांची प्रेस क्लब के अध्यक्ष डॉ संजय मिश्र, झारखंड राज्य खाद्य आयोग की सदस्य डॉ रंजना कुमारी आदि मौजूद थे. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक डॉ कुमार संजय झा ने अतिथियों का स्वागत किया.